THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

# सीधे अंदर आ जाओ
# Walk Right In

Author – Mark Swinney

Christian Science Journal Volume 130, No. 12, December, 2012

"मेरे लिए धार्मिकता के द्वार खोलो: मैं उनमें जाऊँगा तथा मैं दाता की स्तुति करूँगा।" (भजनसंहिता 118:9)

पहली बार पढ़ने पर एक व्यक्ति इस गद्य पर साधारण नज़र डाल कर निकल सकता है – यह बाइबल के किसी भी दूसरे चटकदार, काव्यात्मक वाक्य की तरह प्रतीत हो सकता है। परन्तु जब भी मैं इस पर सोचने के लिए रूका, मैने देखा है कि यह प्रभावशाली प्रार्थना के लिए महत्वपूर्ण, अर्थपूर्ण तथा उपयोगी निर्देशन प्रस्तुत करता है।

"धार्मिकता के द्वार" विभिन्न पाठकों के लिए विभिन्न बातें चिन्हित कर सकते हैं। मेरे लिए, मैंने इन्हें स्वर्गिक सन्देश प्रस्तुत करते हुए देखा है जो परमेश्वर हम में से प्रत्येक को देता है, परमेश्वर के विस्मयकारी साम्राज्य का रहस्योद्घाटन करते हुए। यह "द्वार" निस्सदेंह ही स्वर्गिक प्रतीत होते हैं, फिर भी वह दूर नहीं हैं।

इस बाइबल गद्य के बारे में मुझे विशेष तौर पर यह पसन्द है कि कैसे यह वर्णन करता है कि हम उसके बाद क्या करते हैं जब द्वार खोल दिए जाते हैं। हम "उनमें अंदर चले जाते है।" दूसरे शब्दों में, हम उस जगह को छोड़ देते है जहाँ हम थे और नई जगह में चले जाते हैं। यह एक स्पष्ट मानसिक बदलाव को व्यक्त करता है।

मैंने पाया है कि सोच में इस तरह का बदलाव लाने के लिए निष्ठावान तत्परता का होना जरूरी है। परमेश्वर, दिव्य मन को अपने द्वार खोलने के लिए कहने का कोई कारण नहीं यदि कोई अंदर जाने के लिए तथा जो कुछ उनसे परे है, उसे मान्यता देने के लिए तत्पर नहीं – दृष्टिकोण तथा नज़रिए के मूलभूत रूपांतरण को मान्यता देने के लिए। यह शायद बहुत सरल कार्य न हो, परन्तु यह कुछ ऐसा है जिस पर हर समय कार्य करने की ज़रूरत है, क्योंकि अदायगी बहुत ही अद्भुत है।

एक व्यक्ति को जो चल नहीं सकता था, जीसस ने पूछा, "क्या तुम पूर्ण बना दिए जाओगे?" (यूहन्ना 5:6) इस प्रश्न का एक स्पष्ट उद्देश्य था। जीसस उस व्यक्ति में ग्रहणशीलता उत्पन्न कर रहे थे। वह पूछ रहे थे, "क्या तुम पूरी तरह से नए नज़रिए तथा दृष्टिकोण को सम्मिलित करते हुए एक नया जीवन पाना चाहोगे? क्या आज तुम खड़े होने के लिए तथा आगे बढ़ने के लिए तत्पर हो?" मानव के उत्तर तथा क्रियाओं से उसने दर्शाया कि वह तत्पर था। वह खड़ा हुआ और मुक्त हो कर चला गया ।

*For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com*

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मैं जानता हूँ कि अगर आज जीसस मेरे पास चल कर आते और यही प्रश्न पूछते, मुझे इसके बारे में गहराई से सोचना पड़ता। क्या मैं वास्तव में अपने बारे में झूठी समझ को छोड़ने के लिए तत्पर हूँ–एक ऐसा दृष्टिकोण उतना ही झूठा जितना कि वह जिसे शायद मैंने बहुत कस कर थामा हुआ है? क्या मैं अपने बारे में मेरी अपनी सीमित धारणा को ज्ञानवान तथा असीमित राय के साथ बदलना चाहूँगा जो परमेश्वर मेरे बारे में रखता है? या क्या मैं इसके बजाए डर जाऊँगा कि शायद मैं उन चीजों को खो न दूँ जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, यदि मैं सोच के इस प्रकार के मूलभूत बदलाव को होने देता हूँ जो जीसस सुझा रहे हैं?

मेरी बेकर ऐडी अपनी किताब साँयस एण्ड हैल्थ विद की टू दॅ स्क्रिपर्चस में इस तरह के निर्णायकों के बारे में कहती हैं। वह कहती हैं, एक छोटे बच्चे की तरह बनने की तथा नए के लिए पुराने को छोड़ने की तत्परता, सोच को प्रगतिशील विचार के लिए ग्रहणशील बना देती है। झूठे सीमाचिन्हों को छोड़ने का आंनद तथा उन्हें लुप्त होते हुए देखने की खुशी–यह व्यवहार परम समन्वय को प्रेरित करने में सहायता देता है। इन्द्रि तथा स्वयं का शुद्धिकरण प्रगति का प्रमाण है (पृष्ठ 323–324)।

फिर उनमें से कुछ "झूठे सीमाचिन्ह" कौन से हैं जिनके प्रति हमें अपने पीठ मोड़ने के लिए कहा जाता है? उनमें से कुछ का नाम लेते है: बार–बार आने वाले डर, आदतन् नाराज़गी, निराशा, स्वः–धार्मिकता और पेटूपन–चाहे यह भौतिक पदार्थ प्राप्त करने की चाह के रूप में देखें जाएँ, या शायद किसी के व्यक्तित्व या पद के साथ एक पूरी तरह विचार ग्रस्तता।

कोई शक नहीं, हम इस तरह के सीमाचिन्हों से दूर जाकर खुश हैं। हम उन्हें त्याग कर खुश हैं और पूरे दिल से प्रार्थना करते हैं। "मेरे लिए धार्मिकता के द्वार खोलो: मैं उनमें जाऊँगा तथा मैं दाता की स्तुति करूँगा।" हमारे काम हमारी प्रार्थनाओं की निष्ठा को प्रमाणित करते हैं।

**पहले से ही, तुम और मैं तथा प्रत्येक, परमेश्वर के साम्राज्य में सुरक्षित रूप से वास करते हैं, पवित्र अच्छाई के साम्राज्य में।**

परमेश्वर के अधिकार क्षेत्र के द्वारों से सीधे अंदर चले जाना स्थान में बदलाव की माँग नहीं करता; यह नज़रिए में बदलाव की माँग करता है। यह दहशत की एक सोच से, कि हम द्वारों से बहिष्कृत किए हुए तथा बाहर निकाले गए हैं, एक बदलाव को सम्मिलित करता है, यह जानने के लिए कि हम वस्तुतः–वास्तव में–अभी उन के अंदर सुरक्षित रूप से वास कर रहे हैं। पहले से ही, तुम और मैं तथा प्रत्येक, परमेश्वर के साम्राज्य में सुरक्षित रूप से वास करते हैं, पवित्र अच्छाई के साम्राज्य में। हम में से प्रत्येक को एक महान् उपहार मिला हुआ है–प्रेम जो कि परमेश्वर है, के साथ हमारा एक जुट होना। जैसे श्रीमति ऐडी साँयस एण्ड हैल्थ में कहती हैं, 'परमेश्वर प्रेम है'। इससे ज्यादा हम पूछ नहीं सकते, इससे उच्चतर हम देख नहीं सकते, इससे दूर हम जा नहीं सकते (पृष्ठ 6)।

एक ऐसे अद्भुत उपहार के साथ जो हमें पहले ही दिया जा चुका है, इस उपहार के लिए हमारी स्वीकृति तथा आभार की ही जरूरत है। ऐसा करने के लिए हमे अपनी पीठे मोड़ लेनी चाहिए तथा स्वार्थी भौतिकता की अपनी अनुमानित कृतज्ञता के साथ कपटपूर्ण भेंट को ठुकरा देना चहिए। ऐसा करना तुम्हें किसी वास्तविक अच्छाई से कभी वंचित नहीं करेगा। अपितु यह सही विद्यमानता तथा अच्छाई के बारे में तुम्हारे दृष्टिकोण का शुद्धिकरण करता है। परमेश्वर का साम्राज्य वास्तव मे आ गया है–यह यहीं है, और तुम इसके स्थायी निवासी हो। मानसिक रूप से आगे बढ़ो। प्रार्थना से जान लो कि तुम वास्तव में कौन हो।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जीसस हमेशा ही **परमेश्वर** में पूर्ण से विद्यमानता के उपहार के बारे में सचेत थे और उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा ''मेरा साम्राज्य इन संसार का नही है'' (यूहन्ना 18:36)। अपनी अभेद्य आध्यात्मिकता के बोध ने उन्हें **परमेश्वर** तथा मानव जाति के लिए अधिक लाभदायक बनाया। हम यही कह सकते हैं–हमारा साम्राज्य इस संसार का नहीं है। हम **आत्मा** में रहते हैं, चलते हैं और यहाँ और अब **आत्मा** में हमारी विद्यमानता है। हम आसूँओ तथा कमी, सीमितता और कमजोर शारीरिकता के संसार से संबंध नही रखते। अपितु हम वर्तमान तथा यर्थाथ में यहां **परमेश्वर** के साम्राज्य में रहते हैं जो कि अनन्त **प्रेम, मन, अन्तश्चेतना** तथा सत्य है।

फिर जीवन वास्तव में रंगीन तथा हर्षित है। यह वास्तव में आध्यात्मिक है। जीवन के झूठे सीमाचिन्हों से परे मानसिक बदलाव लाना खुशी देता है, और सोच को धार्मिकता में, वास्तविकता में आगे बढ़ने की अनुमति देता है। इन बदलावों को लाने के हमारे अभ्यास में, शायद कुछ दिन दूसरों से बेहतर हो, परन्तु हम आनन्दित हो सकते है, जब भी वह हमें सही मिले।

मुझे अच्छा लगता है कि इस तरह की प्रार्थना कितनी व्यवहारिक है। सोच में बदलावों को वास्तविक होना होगा–उन्हें निष्ठावान तथा गहन होना हेगा। एक ऊपरी सोच कहती है, ''मैं इसे सच मानता हूँ'' बिना हृदय में इसके साथ को यर्थाथ रूप से महसूस किए हुए तथा इसे अपने कामों में जीते हुए, असल में यह नज़रिए में एक विशुद्ध बदलाव है ही नहीं। उस सब की स्वीकृति जो हमें दिव्य रूप में प्रदान की गई है, एक मूलभूत रूपाँतरण की माँग करती है। इसलिए उन पलों में निवेश करो जिनमें तुम अथाह खुशी महसूस करते हो कि कैसे तुम पहले ही **परमेश्वर** के साम्राज्य में हो तथा उसकी रचना का हिस्सा हो; इसलिए **परमेश्वर** से जुड़ी हुई एक–एक विशेषता, तुम में भी है। सर्तक रहो कि यह तुम्हारे लिए क्या करता है। **परमेश्वर** इस तरह के रूपांतरण के लिए सामर्थ्य प्रदान करता है तथा इस सामर्थ्य पर सहज भाव से और आत्म–विश्वास के साथ निर्भर कर सकते हो।

दिव्य **मन** की वर्तमान अच्छाई तुम में चमक रही है, इसलिए अपने सारे दिन के दौरान तुम इस अच्छाई को अपनी सोच में प्रज्जवलित कर सकते हो तथा इस के लिए कृतज्ञ हो सकते हो। जहाँ भी तुम हो, वही **परमेश्वर** है। तुम **परमेश्वर** के इस वर्तमान साम्राज्य के द्वारों से सीधे अंदर जा सकते हो तथा **परमेश्वर** के सुनिश्चित सार, शक्ति या अच्छाई के साथ अपनी प्राकृतिक एकजुटता का ज़ायका ले सकते हो।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.